SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

शिवराजविजय की भाषा–शैली

परमानन्द कुमार, शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
परमानन्द कुमार, शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखण्ड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 01/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 08/07/2022
Plagiarism : 01% on 01/07/2022

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 1%

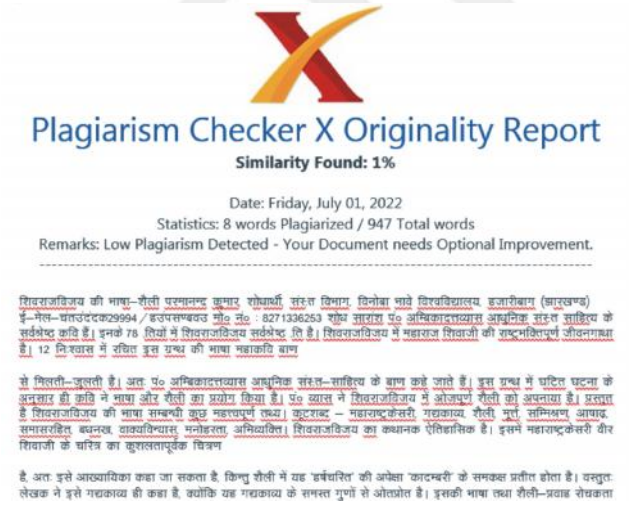

Date: Friday, July 01, 2022
Statistics: 8 words Plagiarized / 947 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

शिवराजविजय की भाषा–शैली परमानन्द कुमार, शोधार्थी, संस्त विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग (झारखण्ड) ई–मेल–घंतउंदंदक29994 / हउपसण्बवउ मो० नं० : 8271336253 शोध सारांश पं० अम्बिकादत्तव्यास आधुनिक संस्त साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनके 78 तियों में शिवराजविजय सर्वश्रेष्ठ ति है। शिवराजविजय में महाराज शिवाजी की राष्ट्रभक्तिपूर्ण जीवनगाथा है। 12 निःश्वास में रचित इस ग्रन्थ की भाषा महाकवि बाण

से मिलती–जुलती है। अतः पं० अम्बिकादत्तव्यास आधुनिक संस्त–साहित्य के बाण कहे जाते हैं। इस ग्रन्थ में घटित घटना के अनुसार ही कवि ने भाषा और शैली का प्रयोग किया है। पं० व्यास ने शिवराजविजय में ओजपूर्ण शैली को अपनाया है। प्रस्तुत है शिवराजविजय की भाषा सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य। कूटशब्द – महाराष्ट्रकेसरी, गद्यकाव्य, शैली, मूर्त, सम्मिश्रण, आपाद, समासरहित, बधनख, वाक्यविन्यास, मनोहरता, अभिव्यक्ति। शिवराजविजय का कथानक ऐतिहासिक है। इसमें महाराष्ट्रकेसरी वीर शिवाजी के चरित्र का कुशलतापूर्वक चित्रण

है, अतः इसे आख्यायिका कहा जा सकता है, किन्तु शैली में यह 'हर्षचरित' की अपेक्षा 'कादम्बरी' के समकक्ष प्रतीत होता है। वस्तुतः लेखक ने इसे गद्यकाव्य ही कहा है, क्योंकि यह गद्यकाव्य के समस्त गुणों से ओतप्रोत है। इसकी भाषा तथा शैली–प्रवाह रोचकता

शोध सार

पं० अम्बिकादत्तव्यास आधुनिक संस्कृत साहित्य के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। इनके 78 कृतियों में शिवराजविजय सर्वश्रेष्ठ कृति है। शिवराजविजय में महाराज शिवाजी की राष्ट्रभक्तिपूर्ण जीवनगाथा है। 12 निःश्वास में रचित इस ग्रन्थ की भाषा महाकवि बाण से मिलती–जुलती है। अतः पं० अम्बिकादत्तव्यास आधुनिक संस्कृत–साहित्य के बाण कहे जाते हैं। इस ग्रन्थ में घटित घटना के अनुसार ही कवि ने भाषा और शैली का प्रयोग किया है। पं० व्यास ने शिवराजविजय में ओजपूर्ण शैली को अपनाया है। प्रस्तुत है शिवराजविजय की भाषा सम्बन्धी कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य।

मुख्य शब्द

महाराष्ट्रकेसरी, गद्यकाव्य, शैली, समासरहित, वाक्यविन्यास.

शिवराजविजय का कथानक ऐतिहासिक है। इसमें महाराष्ट्रकेसरी वीर शिवाजी के चरित्र का कुशलतापूर्वक चित्रण है, अतः इसे आख्यायिका कहा जा सकता है, किन्तु शैली में यह 'हर्षचरित' की अपेक्षा 'कादम्बरी' के समकक्ष प्रतीत होता है। वस्तुतः लेखक ने इसे गद्यकाव्य ही कहा है, क्योंकि यह गद्यकाव्य के समस्त गुणों से ओतप्रोत है। इसकी भाषा तथा शैली–प्रवाह रोचकता से परिपूर्ण है, अतः इसे गद्यकाव्य के साथ–साथ ऐतिहासिक उपन्यास कहना भी युक्तिसङ्गत है। तीन विरामों और प्रत्येक विराम के अन्तर्गत् चार–चार निःश्वासों में लिखित इस रचना के काव्यकार पण्डित अम्बिकादत्तव्यास हैं।

मनोगत भावों को पहहृदय संवेद्य बनाने का प्रमुख साधन भाषा है और भाषा की क्रमबद्धता या रचना विधान को ही सम्भवतः शैली भी कहा जाता है। अतः सामान्यतः भाषा–शैली से ऐसा प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। इस आधार के साथ यह कहा जा सकता है कि काव्य में

मनोगत भावों को मूर्त रूप प्रदान करने का प्रमुख एवं सहज साधन शैली है। "शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्" के परिप्रेक्ष्य में यदि अर्थ काव्य की आत्मा है तो शब्द अर्थात् शैली काव्य का शरीर। अतः भाव की मनोहरता, स्थिरता और सूक्ष्मता शैली पर ही निर्भर होती है।

डॉ० श्यामसुन्दर दास के अनुसार किसी कवि या लेखक की शब्द योजना, वाक्यांशों का प्रयोग, उसकी बनावट और ध्वनि आदि का नाम ही शैली है। दण्डी ने काव्यादर्श में – "अस्त्यनेको गिराममार्गः सूक्ष्मभेदः परस्परम्" कहा है। इन भावनाओं के अनुसार स्थूलतः शैली के दो भाग किये जाते हैं– समास शैली और व्यास शैली। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक व्यक्तित्वों के आधार पर आजकल विद्वानों ने मार्ग (शैली) को चार प्रकार का माना है। किन्तु अनन्तर काल में इन्हें शैली न कहकर रीतियाँ कहा जाने लगा है। ये रीतियाँ चार हैं– 1) वैदर्भी, 2) गौडी, 3) पाञ्चाली तथा 4) लाटी।

1) वैदर्भी रीति – कोमल वर्णों और असमानता अथवा अल्पसमासा, माधुर्यपूर्ण रचना वैदर्भी रीति है।
2) गौडी रीति – महाप्राण घोषवर्णा, ओजगुणसम्पन्ना तथा समास बहुला रचना गौडी रीति है।
3) वैदर्भी और गौडी का सम्मिश्रण पाञ्चाली रीति है।
4) वैदर्भी और पाञ्चाली का सम्मिश्रण लाटी रीति है।

शिवराजविजय की भाषा सरल, सुबोध एवं स्पष्ट है। पदावलियों के प्रयोग वर्ण्य–विषय के अनुसार होने चाहिए। एक ही विधा प्रत्येक वर्णन को प्रभावमय नहीं बना सकती है, क्योंकि शिवराजविजय में उचित शब्दावलियों का प्रयोग, अर्थपूर्ण वाक्यविन्यास तथा अवसर के अनुकूल कोमल तथा कठोर वर्णों का प्रयोग किया गया है। पं० व्यास जी ने अवसरानुकूल एक ओर दीर्घ समास बहुला पदावली का प्रयोग किया है तो दूसरी ओर सरल लघु पदावली का। पूर्वोक्त रीतियों के सन्दर्भ में शिवराजविजय में पं० व्यास जी ने पाञ्चाली रीति का आश्रय लिया है। इनके साक्ष्य में अफजल खाँ के शिविर का वर्णन करते हुए पं० व्यास जी समस्त पदावली में कहते हैं:

"इतस्तु स्वतन्त्र यवनकुल–भुज्यमान–विजयपुराधीश–प्रेषितः पुण्यनगरस्य समीपे एव प्रक्षालित–गण्डशैल–मण्डलायाः निर्झरवारिधारा–पूर–पूरित–प्रबल–प्रवाहायाः, पश्चिमपारावारप्रान्त –प्रसूतगिरिग्रामगुहागर्भनिर्गताया अपि प्राच्यपयोनिधिचुम्बनचञ्चुरायाः, रिङ्गत्तरङ्गभङ्गो– द्भूतावर्त्तशतभीमायाः, भीमायाः नद्याः ..... ।"[1]

दूसरी ओर पं० व्यास जी की लघुसमास शैली भी अत्यन्त भावपूर्ण और मार्मिक है। इसमें अभिव्यक्ति की स्पष्टता और सूक्ष्मता निहित है– "एव भगवान् मणिराकाशमण्डलस्य, चक्रवर्ती खेचरचक्रस्य, कुण्डलमाखण्डलदिशः, दीपको ब्रह्माण्डभाण्डस्य, प्रेयान् पुण्डरीकपटलस्य, शोकविमोकः कोकलोकस्य, अवलम्बो रोलकदम्बस्य, सूत्रधारः सर्वव्यवहारस्य, इनश्च दिनस्य।"[2]

पं० व्यास जी की इस रचना में समासरहित सुन्दर पदावलियों का प्रयोग भी अत्यन्त हृद्य है:

"बटुरसौ आकृत्या सुन्दरः, वर्णेन गौरः, जटाभिर्ब्रह्मचारी, वयसा षोडशवर्षदेशीयः, कम्बुकण्ठः, आयतललाटः, सुबाहुर्विशाललोचनश्चाऽऽसीत् ।"[3]

पं० अम्बिकादत्तव्यास विद्वान् थे, भाषा पर उनका पूर्ण अधिकार था और संयोजन करने का ध्यान सदैव रखते थे। जैसा कोमल या कठोर भाव का वर्णन करना होता था उसी के अनुसार भाषा संयोजन करते थे। शिवाजी द्वारा अफजल खान को अपने बघनख से हत्या का कठोर वर्णन देखिए:

"शिववीरस्तु आलिङ्गनच्छलेनैव स्वहस्ताभ्यां तस्य स्कन्धौ दृढ़ं गृहीत्वा सिंहनखैर्जत्रुणी कन्धरां च व्यपाटयत् रूधिरदग्धं च तच्छरीरं कटिप्रदेशे समुत्तोल्य भूपृष्ठेऽपोथयत् ।"[4]

भावों की सरल एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए उनकी भाषा द्रष्टव्य है:

"क्वचिद् हरिद्रा हरिद्रा, लशुनं लशुनम्, मरिचं मरिचं, चुक्रं चुक्रम्, वितुन्नकं वितुन्नकम्, शृङ्गवेरं शृङ्गवेरम्, रामठं रामठम्, मत्स्यण्डी मत्स्यण्डी, मत्स्या मत्स्याः, कुक्कुटाण्डं, कुक्कुटाण्डम्, पललं पललमिति।"[5]

शिवराजविजय में विभिन्न ऋतुओं का भी वर्णन है। चतुर्थ निःश्वास में आषाढ़ मास का स्वाभाविक वर्णन देखिएः

"मासोऽयमाषाढ़ः, अस्ति च सायं समयः, अस्तं जिगमिषुर्भगवान् भास्करः सिन्दूरद्रवस्नातानामिव वरूणदिक्–अवलम्बिनामरूणवारिवाहानामभ्यन्तरं प्रविष्टः। कलाविङ्काश्चाटकैररूतैः परिपूर्णेषु नीडेषु प्रतिनिवर्तन्ते।"[6]

नवम निःश्वास में शिवाजी के सभी सैनिक रहमत खाँ को मारने के लिए टूट पड़ते हैं। परन्तु शिवाजी अत्यन्त उदारमना थे। वे मना करते हैं। इसका भी वर्णन एक सहृदय और परोपकारी कवि ही कर सकता हैः

"वीरोऽसौ, वीरोऽसौ, न हन्तव्य, न हन्तव्यः। किन्तु जीवन्नेव ग्रहीतव्यः"[7]

निष्कर्ष

अस्तु इस कृति के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि शिवराजविजय में भाषा और शैली का प्रयोग भाव के अनुसार ही किया है। यत्र–तत्र व्याकरणिक शब्दों का प्रयोग पण्डित अम्बिकादत्तव्यास की विद्वत्ता का प्रदर्शन करता है।

संदर्भ सूची

1. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 1, पृ० 102.
2. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 1, पृ० 03.
3. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 1, पृ० 09.
4. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 2, पृ० 228.
5. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 2, पृ० 159.
6. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–1 / 4, पृ० 329.
7. मिश्र, रमाशङ्कर, *'शिवराजविजयः'*, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, संस्करण–2018 ई०, विराम / निःश्वास–3 / 1, पृ० 77.

****